

॥ = ॥ = = ॥  
॥ रामाष्टकप्रारम्भः ॥  
॥ = ॥ = = ॥

1

श्रीगणेशाय नमः ॥ हे राम वन्द्य कुरुणा कारीन वन्द्यो  
 हराव वेन्द्र रघुनन्दन राजराज ॥ हे जानकी राजन रञ्जन  
 कोशलेश स्मरतु निर्दह्य हृदयं मम देहि दास्यम् ॥ १ ॥  
 हे विश्वान्तक दयाकर वारिजा द्रव्यमादिदेव मुकुट  
 चिन्तपादपद्म हे लक्ष्मणाग्रज दयाकर शान्ति मूर्ते  
 हे निर्दह्य हृदयं मम देहि दास्यम् ॥ २ ॥  
 हे राजपुत्र सुखसागर श्रीनिवास हे वेदवेद्य परुषो  
 तम ज्ञानगम्य हे सत्यसिन्धो भरताग्रज शान्ति सिन्धो  
 स्मरतु निर्दह्य हृदयं मम देहि दास्यम् ॥ ३ ॥ हे चित्रकूट  
 गिरिगुरु राजसिंह हे धर्मपाल मुनिमानस राजहंस ॥



हे शनिरामया सायकवापहस्तस्मरतुर्निगद्य हृदयं मम दे  
हिदास्पम ॥४॥ हे भक्तवत्सल कृपाकराक्षसा २ हे भजनान  
नय हृत्कमलाधिप ॥ हे शत्रुतापन हरावतार रम्य स्म  
स्मरतुर्निगद्य हृदयं मम दे हिदास्पम ॥५॥ हे मेघिनी वि  
रह भजन सेतुकारिन् हरावतारानुज भगीरथ कल्प वंक्ष  
हे देवतापत्रय मोचन विष्णु भूते स्मरतुर्निगद्य हृदयं मम दे  
हिदास्पम ॥६॥ हे ब्रह्मनिष्ठ गुरा कर्म विभिन्न भूते हे बोध  
बोध प्रतिबोधित बोध रूप ॥ हे भावगम्य सनकादिभक्त्युप  
बोध स्मरतुर्निगद्य हृदयं मम दे हिदास्पम ॥७॥ यः पूरा  
पुण्यसुकृती गुरुभक्ति निष्ठो रामायणं कथयति व्यास सुत प्रसी  
तम् ॥ हिलागुरात्मक मिदं सुखदुःख हेतुं देहं प्रयाति रविवर्ण  
इति श्री व्यासालम्बेन जकृतं रामायणं संपूर्णं शुभमस्तु ॥

3

रामाय कंसमाप्नुम